ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

आधुनिकता एवं परम्परा से सृजित भारतेन्दु काल के साहित्य की वर्तमान में प्रासंगिकता: एक अध्ययन

वन्दना शर्मा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. दीपक शर्मा, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

सांराश

हिन्दी–गद्य साहित्य में आधुनिक एंव विधिवत परिवर्तन भारतेन्दु युग से स्वीकार किया जाता है। इस युग में साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना और जनजागरण उत्पन्न करने में जितना योग भारतेन्दु युग के लेखकों की रचनाओं से मिला उतना पूर्ववर्ती रचनाओं के सामूहिक प्रयत्नों से भी संभव नहीं हुआ था। रीतिकालीन दरबारी कवियों की श्रृंगार और रीतिपरक कविता से जनता का ध्यान हटाकर उसे देशाभिमान, देशापकार तथा राष्ट्रीय प्रेम की ओर उन्मुख करने वाले भारतेन्दु युगीन रचनाकारों का हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय स्थान बन गया।

भारतेन्दु की वाणी सबसे पहले स्वदेश, स्वभाषा और स्वसंस्कृति के गौरवगान में प्रवृत्त हुई और उनके मोहक प्रभाव से बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी, प्रेमधन और जगमोहन सिंह की लेखनी भी उसी दिशा में प्रवृत हो गई।

हिन्दी गद्य साहित्य को आधुनिक बनाने में इन सभी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही उन्होंने निबन्ध, आलोचना, उपन्यास, नाटक, एकांकी नाटक, जीवनी साहित्य और पत्र–पत्रिकाओं के चलन आदि को भी बढ़ावा दिया। अतः इन रचनाकारों, लेखकों ने आधुनिक साहित्य को प्रशस्त बनाने में अपनी सराहनीय भूमिका अदा की।

मूल शब्द :– आधुनिकता, अवधारणा, व्याख्या, आधुनिकीकरण, समकालीनता, समसामयिकता परंपरा, प्रगति, नगरीकरण, औद्योगीकरण, सहमति, अभिमानी, पारस्परिक, लोकहित, समाज सुधार, मातृभाषा, श्रृंगारिक रसिकता, अलंकरण मोह, रीति–निरूपण, प्रकृति, स्वदेश, स्वभाषा और स्वसंस्कृति आदि।

शोध का परिचययात्मक विश्लेषण

आधुनिकता की अवधारणा की व्याख्या और विश्लेषण को लेकर विद्वानों के बीच एक लम्बे समय से विचार विमर्श होता रहा है। इस विचार विमर्श से यह स्पष्ट रूप से लक्षित किया जा सकता है कि उक्त अवधारणा से सम्बन्धित सहमति की अपेक्षा असहमति के बिन्दु ही अधिक उभर कर हमारे सामने आते है।

अतः जब तक हम आधुनिकता के साथ–साथ इन अवधारणाओं जैसे आधुनिकता बोध, आधुनिकीकरण, समकालीनता, समसामयिकता परंपरा, प्रगति, नगरीकरण, औद्योगीकरण और अन्य समानान्तर प्रत्ययों के पारस्परिक सम्बन्ध को उनके वास्तविक परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित नहीं किया जाता, तब तक आधुनिकता और इसकी अवधारणा समझ नहीं आ सकती।

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार "जिसे हमें आधुनिकता कहते है वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अन्धविश्वास से बाहर निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुँचने की प्रक्रिया है। आधुनिक वह है, जो मनुष्य की ऊँचाई, उसकी जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापता है। आधुनिकता वह है जो मनुष्य–मनुष्य को समान समझता है।"

हिन्दी साहित्य की परंपरा कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, घनानन्द, हरिश्चन्द्र, प्रेमचन्द, प्रसाद और रामचन्द्र शुक्ल की परंपरा है। यह वह परंपरा है जिसमें सदैव रूढ़ियों का विरोध किया गया है। यह वह साहित्य है जिसमें कबीर का अक्खड़पन है, तो तुलसी की रामभक्ति है। इन्होंने कहा "काहू की बेटी से बेटा न ब्याहब", तो हरिश्चन्द्र ने कहा "हरिचन्द नगद दमाद अभिमानी के" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का स्वाभिमान अपने ही ढंग का है "चाकरी करेंगे नही चौपट चमार की "। ऐसी परंपरा के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को समझना वस्तुतः अपनी परंपरा को समझना है। इन्होंने हमारी जातीय चेतना को उद्‌बुद्ध किया है। उसके विकासशील पक्ष को हमारे सामने रखा है।

यह एक स्थापित सत्य है कि हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का सूत्रपात स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा किया गया। उसके वैशिष्ट को रेखांकित करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जिस प्रकार गद्य की भाषा का स्वरूप स्थिर करके गद्य साहित्य को देशकाल के अनुसार नए–नए विषयों की ओर लगाया उसी प्रकार कविता की धारा को भी नए–नए क्षेत्रों की ओर मोड़ा इस

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

नये रंग में सबसे ऊँचा स्वर देशभक्ति की वाणी का था। उसी से लगे हुए विषय लोकहित, समाज सुधार, मातृभाषा का उद्धार आदि थे। हास्य विनोद के नए विषय भी इस काल में कविता को प्राप्त हुआ। रीतिकाल के कवियों की रूढ़ि में हास्य रूप के अवलम्बन कंजूस ही चले आते थे। पर साहित्य के इस नए युग के आरम्भ से ही कई प्रकार के नए आलम्बन आने लगे जैसे पुरानी लकीर के फकीर, नए फैशन के गुलाम, नोच–खसोट करने वाले अदालती अमले, मूर्ख और खुशामदी रईस, नाम या दाम के भूखे देशभक्त आदि। इसी प्रकार वीरता के आश्रय की जन्मभूमि के उद्धार के लिए रक्त बहाने वाले, अन्याय और अत्याचार का दमन करने वाले इतिहास प्रसिद्ध वीर होने लगे। सारांश यह है कि नई कविता के भीतर जिन नए–नए विषयों के प्रतिबिम्ब आये व अपनी नवीनता से आकर्षित करने के अतिरिक्त नूतन परिस्थिति के साथ हमारे मनोविकारों का सामंजस्य भी घटित करके चले ... कवियों की अनेकरूपता के साथ–साथ उसके विधान का ढंग भी बदल चला। प्राचीन धारा में मुक्तक और प्रबन्ध की जो प्रणाली चली आती थी, उसमें कुछ भिन्न प्रणाली का भी अनुसरण करना पड़ा। पुरानी कविता में प्रबन्ध का रूप कथात्मक और वस्तु वर्णनात्मक ही चला आता था। पर नवीन धारा के आरम्भ में छोटे–छोटे पद्यात्मक निबन्धों की परंपरा भी चली जो प्रथम उत्थान काल के भीतर तो बहुत कुछ भाव प्रधान रही पर आगे चलकर शुष्क और इतिवृत्तात्मक होने लगी "[1]

एक अन्य विद्वान ने भी इस युग के सांस्कृतिक, साहित्यिक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है "(इस युग में) जनचेतना पुनर्जागरण की भावना से अनुप्राणित थी, सक्रियता थी, अपितु इन सबमें गहन अन्तःसम्बन्ध विद्यमान था। भारतेन्दुयुगीन कवि कृतित्व पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसकी परिणति विषय चयन में व्यापकता और विविधता के रूप में हुई। श्रृंगारिक रसिकता, अलंकरण मोह, रीति–निरूपण, प्रकृति का उद्दीपनात्मक चित्रण रीतिकालीन प्रवृत्तियों का महत्त्व क्रमशः कम होता गया और भक्ति तथा नीति को प्रमुख वर्ण्य विषयों के रूप में ग्रहण करने का आग्रह भी नहीं रह गया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जनता को उद्बोधन प्रदान करने के उद्देश्य से जातीय संगीत अर्थात् लोकगीत की शैली पर सामाजिक कविताओं की रचना पर बल दिया।

शोध के सोपान

देश में नये–नये विचारों और भावनाओं का संचार हो रहा था पर हिन्दी उनसे दूर थी। लोगों की अभिरूचि बदल चुकी थी, पर हमारे साहित्य पर उसका कोई प्रभाव नहीं दिखायी पड़ता था। शिक्षित लोगों के विचारों और व्यापारों ने तो दूसरा मार्ग पकड़ लिया था पर उनका साहित्य उसी पुराने मार्ग पर था। वे लोग समय के साथ आप तो कुछ आगे बढ़ आये थे, पर जल्दी में अपने साहित्य को साथ न ले सके थे। उसका साथ छूट गया था वह और वह उनके विचार क्षेत्र और कार्यक्षेत्र दोनों से अलग पड़ गया था।.............. उस समय एक ऐसी सामन्जस्य पटु साहसी और प्रतिभा सम्पन्न पुरूष की आवश्यकता थी जो कौशल से इन बढ़ते हुए विचारों का मेल देश के परम्परागत साहित्य से करा देता। ऐसे ही पुरूष के रूप में बाबू हरीशचन्द्र साहित्य क्षेत्र में उतरे। उन्होंने हमारे जीवन के साथ हमारे साहित्य को फिर से लगा दिया। बड़े भारी विच्छेद से हमें बचाया। इस युग में पुरानी परंपराएँ टूटने के साथ–साथ नयी मान्यताएं स्थापित होने लगी थी। नये परिवेश में लोगों ने जीवन के प्रत्येक पक्ष के सम्बन्ध में अपना पुनर्विचार आरम्भ कर दिया था।

शोध का महत्त्व

भारतीय परिवेश में आधुनिकता का जन्म एक अवैध सन्तान के रूप में हुआ है। इसको पश्चिम की देन समझा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि डार्विन का विकासवाद, फ्रायड का मनोविज्ञान, कार्लमार्क्स का मार्क्सवाद, आइंस्टाइन का सापेक्षतावाद आदि सभी पश्चिम की ही देन है और इसका प्रभाव भी पश्चिम की चिन्तन दृष्टि पर पड़ा। भारत के नगरों में रह रहे मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों का ध्यान इस ओर 20वीं सदी में ही गया। ये बुद्धिजीवी किसी भी राष्ट्रीय चेतना के संवाहक होते है। भारत के शहरों में स्वाधीनता के उपरान्त ही एक शहरी समाज ने अपना रूप एवं आकार निर्धारित किया। इसी कारण आधुनिकता की प्रक्रिया का सम्बन्ध महानगरीय जनता के साथ है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत महानगर निवासी जाने–अनजाने, भीतर–बाहर, पुराने मूल्यों, रीति–रिवाजों, संस्कृतियों आदि को छोड़ते हुए नये जीवन आधार को अपनाते हुए, नये जीवन मूल्यों को रूप देने लगे।

परंपरा एक शाश्वत धारा है, जिसका उदय मानव जीवन के साथ हुआ, और यह परंपरा तब तक रहेगी जब तक इस धरती पर मानव का अस्तित्व बना रहेगा। इस शाश्वत एवं निरन्तर धारा को न तो बनाया जा सकता है, और न ही मिटाया जा सकता है। अन्तस्थ में सनातन रूप में उसका प्रवाह आगे

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

बढ़ता रहेगा। इसके भीतर अतीत के असंख्य आधुनिक समाविष्ट है, और इसी प्रकार एक समय वह वर्तमान को जिसमें आज हम जी रहे है, अतीत बनकर अपने में समाविष्ट कर लेगी।

"परंपरा का वह अंश या रूप जो जड़ निष्क्रिय और अनुकरण अथवा गतानुगतिकता के कारण बोझ हो गया है, रूढ़ि है और जो अंश रचना, प्रगति तथा मौलिकता के द्वारा पुनरान्वेषित होता है, वह परंपरा कहा जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जब तक परंपरा अपनी आन्तरिक प्रतिक्रियात्मक शक्ति से गतिशील रहती है, वह रचनात्मक और मौलिक रहती है तभी तक सार्थक है अन्यथा मात्र रूढ़ि हो जाती है। इस प्रकार परंपरा की व्याख्या करने वाला संतुष्ट हो जाता है। इस अर्थ में परंपरा से विद्रोह का सवाल या उससे अलग हो जाने की बात उठती ही नहीं।"

शोध के उद्देश्य

(i) आधुनिकता और परंपरा में कोई मेल नहीं है। फिर भी साहित्य के सृजन में ये अपनी अहम भूमिका निभाते है।

(ii) आधुनिकता के बीच जो विभेद एवं अन्तर की स्थिति पैदा हुई है उसका एक कारण विज्ञान है।

(iii) परंपरा के महत्त्व को स्वीकार किये बिना जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है। जीवन की अनन्तता की जड़ें परंपरा की धरती से उगी है। जीवन का यदि कोई अस्तित्व है तो वो परंपरा के अस्तितत्व के कारण ही है। कला के साथ–साथ परंपरा का घनिष्ठतम सम्बन्ध हैं।

(iv) आधुनिकता को समसामयिकता के परिप्रेक्ष्य में भी परिभाषित किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामधारी सिंह दिनकर (1973) आधुनिकता बोध, पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली, प्रथम संस्करण,
2. गिरिजा कुमार माथुर,(1976)नई कविता के परिप्रेक्ष्य में (सीमाएँ और संभावनाएँ), अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. ज्ञानोदय, अप्रैल 1967
4. लक्ष्मीकान्त वर्मा (1966)नये प्रतिमानः पुराने निष्कर्ष, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण
5. योगेन्द्र सिंह (1978) एसे ऑन मॉर्डनाइजेशन इन इण्डिया, मनोहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. नरेन्द्र मोहन, आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ,
7. कार्ल मार्क्स ऑन कोलोनियालिज्म, के. मार्क्स एफ. ऐंगल्सि, मास्को फारन लेंग्वेज पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली
8. एम. एन. श्रीनिवास,(1975) आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन/सोशल चेन्ज इन मॉर्डन इण्डिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. नामवर सिंह किरन सिंह, (2004) समीक्षक नमन प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण।
10. गजानन्द माधव (1971) नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, मुक्तिबोध, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण।